Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 8 | August 2023

कुमाऊँनी अंचल में रामलीलाः पिथौरागढ़ सदर की रामलीला के परिप्रेक्ष्य में

शिखर पाण्डेय[1]**, डॉ प्रेमलता कांडपाल पंत**[2]

[1] सहायक प्राध्यापक संत नारायण स्वामी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नारायण नगर पिथौरागढ.

[2] प्राध्यापक लक्ष्मण सिंह महर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पिथौरागढ.

ABSTRACT

सामान्य मनुष्य रूप में जन्म लेकर देवत्व को प्राप्त करना और चरित्र की प्रधानता को बताना, संसार में अपने पुरूषार्थ के द्वारा विधाता के विधान को पलटकर कर्म की प्रधानता पर भगवान राम द्वारा जो बल त्रेतायुग में दिया गया था उसी कर्म की प्रधानता को द्वापरयुग में भगवान कृष्ण ने भगवतगीता रूप में जनसामान्य तक पहुँचाया। भगवान का कर्मप्रधानता का संदेश तो गीता ने इस संसार को दे दिया किंतु इस परम ज्ञान को भगवान राम की लीलाओं के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य रामलीलाओं के मंचन ने किया। भगवान राम द्वारा शासक के साथ ही एक सामान्य व्यक्ति के रूप में अपने मर्यादित चरित्र के द्वारा सम्पूर्ण मानव समाज में जीवन प्रबंध का एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। भगवान राम ने एक पुत्र, एक शिष्य, एक पति, एक भाई और एक मित्र के रूप में जीवन की सभी समस्याओं का सामना किस प्रकार किया जाये इसका एक अनुपम उदाहरण समाज के सामने रखा है। कुमाऊँ क्षेत्र में रामलीला के प्रारंभ की परंपरा अपनी शुरूआत से वर्तमान तक शारदीय नवरात्री के प्रथम दिन से होती आयी है। देश का कोई ऐसा राज्य नहीं वरन् वर्तमान में तो भारत के पड़ोसी देशो के साथ ही अन्य देशो में भी रामलीला मंचन भव्य रूपों में होने लगे हैं। कुमाऊँ क्षेत्र के सभी छोटे–छोटे कस्बों, नगरो, शहरों में भी रामलीला का मंचन अत्यधिक भव्यता के साथ किया जाने लगा है। भगवान राम के जीवन में घटित घटनाओं का स्थानीय स्तर पर अपनी बोली भाषा में रंगमंचीय अभिनय के द्वारा मंचन करना संपूर्ण कुमाऊँ में एक सामान्य बात है।

KEYWORDS: रामलीला, गीता, राम, कृष्ण, कुमाऊँ, पिथौरागढ़

पिथौरागढ़ जिला कुमाऊँ मण्डल के अल्मोड़ा जिले से अलग होकर 24 फरवरी 1960 ई को अस्तित्व में आया। पिथौरागढ़ एक ओर से चीन तो वहीं दूसरी ओर नेपाल की सीमाओं से लगा हुआ क्षेत्र है, जो सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हो जाता है। पिथौरागढ़ सदर की रामलीला का इतिहास इसके जिले के रूप में अस्तित्व में आने से भी पूर्व का रहा है। रामलीला के वर्तमान स्वरूप की शुरूआत अठारहवीं सदी के मध्यकाल के आस–पास की बतायी जाती है। 1860 में इसकी शुरूआत अल्मोड़ा के बरेश्वर मंदिर से मानी जाती है। इसका श्रेय देवी दत्त जोशी जी को दिया जाता है कि उनके प्रयासों से यह रामलीला प्रारंभ हो पायी थी। इसके साथ ही रामलीला पूरे कुमाऊँ क्षेत्र में फैल गयी। 1880 ई में नैनीताल, 1890 ई मे बागेश्वर, 1890 ई के आस–पास ही हल्द्वानी क्षेत्र में एवं 1897 ई में पिथौरागढ़ सदर में प्रारंभ हुई।

राजेश मोहन उप्रेती के अनुसार पिथौरागढ़ की रामलीला की शुरूआत वर्ष 1897 ई में तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर देवीदत्त मकड़िया के प्रयासों से हुई। तब पिथौरागढ़ में बिजली की कोई व्यवस्था नहीं थी। मंचन के लिए चीड़ की लकड़ियों की मशाल बनाई जाती थी। केशव दत्त पंत रामलीला मंचन के पहले वक्ता मैनेजर थे। वाद्य यंत्र कम थे। लोक कलाकार हरकराम ने सारंगी और जैंतराम ने तबले में संगत दी थी। पहले मंचन में राम की भूमिका कमलापति ने और सीता की भूमिका पूर्णानंद पुनेठा ने निभाई थी। कुछ ही वर्षो में रामलीला मंचन ने ख्याति प्राप्त कर ली। तब सीमांत के दारमा जौहार से लेकर नेपाल तक के श्रद्धालु रामलीला मंचन देखने के लिए यहां पहुंचते थे। नगर के पुराने मुस्लिम परिवारों का मंचन में विशेष योगदान रहा। इन्हीं परिवारों के लोग कलाकारों के मेकअप की व्यवस्था संभालते थे।

(पिथौरागढ़ सदर की रामलीला में पात्रों के साथ गोविन्द लाल गुप्ता जी)

पिथौरागढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कृष्णानंद उप्रेती, गोविंद लाल गुप्ता (1925 ई से 1987 ई तक चौधरी गोविन्द लाल गुप्ता ने रामलीला कमेटी के प्रबंधन का पदभार संभाला। उनका कार्यकाल पिथौरागढ़ की रामलीला का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है।) गंगाराम पुनेठा, प्राणनाथ अरोड़ा आदि के प्रयासों से पिथौरागढ़ की रामलीला आगे बढ़ी। 1920 ई में गैस लैंप की रोशनी में मंचन हुआ। रामलीला को शास्त्रीय रूप संगीतज्ञ बुलाकी राम (इन्हें ही पिथौरागढ़ क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत का जनक माना जाता है जिन्होंने यहां के निवासियों को शास्त्रीय संगीत की बारीकियों से परिचित करवाया था।) ने दिया। रामलीला के प्रारंभिक वर्षों में अहमद बख्श सितार पर संगत किया करते थे। वे पेशावर से आये थे और प्रख्यात शिक्षक हैदर बख्श के दादा थे। पिथौरागढ की रामलीला में हामोनियम का पहली बार प्रयोग 1921 ई में हुआ। इन्तिया राम पहले हारमोनियम मास्टर बने। इस दौर में तबले में संगत के लिये गल्लिया उस्ताद और रत्ती राम आये। ये स्थानीय मिरासी परिवारों से थे। बाद में चिरंजीलाल हारमोनियम बजाने लगे। उस्ताद इन्तिया अपनी सारंगी के साथ लगभग मृत्युपर्यन्त रामलीला से जुड़े रहे। 1959 ई में हुए एक भीषण अग्निकांड में रामलीला का सारा सामान जलकर खाक हो गया, लेकिन नगर के लोगों ने रामलीला मंचन रुकने नहीं दिया। आपसी सहयोग से रामलीला का नया साजो–सामान खरीदा गया और रामलीला चलती रही।

(वर्तमान सदर रामलीला पिथौरागढ़ का रामलीला मैदान नाम से प्रचलित मंच)

पिथौरागढ़ सदर की रामलीला पूरी तरह से शास्त्रीय राग– रागिनीयों पर आधारित है। रामलीला के प्रमुख पात्रों द्वारा राग मालकौंस, बहार, मिश्र पीलू, काफी, बिलावल भैरवी आदि विभिन्न रागों में रामलीला का गायन किया जाता है। हारमोनियम एवं तबले की संगत पूरी तरह से शास्त्रीयता पर आधारित होती है, चाहे सोलह मात्रा की तीन ताल हो , दस मात्रा की झप ताल हो या रूपक की सात मात्रा हो साथ ही बीच–बीच में दादरा और कहरवा ताल से पात्रों में जोश भरने का प्रयास सम्पूर्ण रामलीला में किया जाता रहा है। रामलीला की खास बात यह है कि नाटक में अभिनय करने वाले पात्र किसी नाटक मण्डली से नहीं जुडे रहते हैं अपितु वे आम लोगों से आये सामान्य कलाकार ही होते हैं। रामलीला में बोले जाने वाले सम्वादों, धुन, लय, ताल व सुरों में पारसी थियेटर की छाप साफ दिखायी देती है। इसके साथ ही ब्रज के लोक गीतों तथा नौटंकी की मिली–जुली झलक भी यहां की रामलीला में मिलती है। सम्वादों में आकर्षण व प्रभाव लाने के लिये कहीं कहीं पर नेपाली भाषा व उर्दू की गजल का प्रयोग कर लिया जाता है। रामलीला में सम्वादों में स्थानीय बोलचाल के सरल शब्द चलन में लाये जाते है। रावण परिवार के दृश्य में मंचित नृत्य व गीतों में अधिकांशतः कुमाउँनी शैली प्रयोग में लायी जाती है। रामलीला के मचन में तालीम का महत्व अत्यधिक माना गया है। रामलीला मंचन के प्रथम दिवस से करीब एक महीना पूर्व से ही पात्रों को तैयार कराने का कार्य विज्ञ लोगों द्वारा किया जाता है। पात्रों की भूमिका निभाने वाले बच्चों से लेकर बड़ों तक को प्रत्येक दिन शास्त्रीय आधार पर अपने–अपने पात्र के गायन और अभिनय का कठोर अभ्यास कराया जाता है, जिससे मंच पर त्रुटि की संभावना क्षीण हो जाये।

पिथौरागढ़ सदर रामलीला में पात्रों के वाद–संवाद की विशिष्ट शैली को अपनाया गया है, जिसमें अत्यधिक समय एक ही स्थान पर खड़े होकर अपने मुख और शारीरिक हाव–भावों के माध्यम से संवादों को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाता है। रामलीला में उग्र पात्र का किरदार निभाने वाले ही मंच पर एक छोर से दूसरे छोर तक उछल कूदकर चरित्र के साथ तारतम्य बैठाने का कार्य करते हैं। हनुमान, रावण, बाली, मेघनाद, अक्षय कुमार, ताड़का, सूपर्नखा, आदि पात्र मंच का भरपूर उपयोग कर

जनमानस को अपनी प्रतिभा से मंत्रमुग्ध कर लेते हैं , जिससे देखने वाले सभी लोगों में एक नया उत्साह और ऊर्जा का संचार हो जाता है।

रामलीला के कुछ संवाद तो पिथौरागढ़ में इतने अधिक प्रचलित हो चुके हैं कि इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि क्षेत्र के बच्चे– बच्चे तक को ये संवाद मुँहज़बानी याद हो गये हैं। पिथौरागढ रामलीला के कुछ प्रमुख संवाद निम्न प्रकार से हैं।

1. **जनक दरबार में लक्ष्मण परशुराम संवाद–**

- अरे जनक तुम लाओ सीया को
- क्यौ व्यर्थ बात करता क्या मौत तेरी आई
- किसने तोड़ा धनुष शंकर का

2. **अंगद रावण संवाद–**

- क्यूं अपनी शान घटाता है, क्यूं नहीं राम शरण तू आता है
- क्या कहा फिर से कहना क्या तूने मुझको सुना दिया
- मार गयी मती तोर बंदर उठाया जिसने कैलाश पर्वत
- मै जानूँ बल तोर रावण धनुष तोड़न गयो जनकपुर
- 'अरे तू बंदर सभा के अंदर' रावण का और 'अरे तू निशाचर बात कर हंसकर गर्दन पकड़ी बाली ने' अंगद का वाद–प्रतिवाद अनायास ही सबका मन मोह लेता है।
- रावण लंका वाले मतवाले पहले तू अपने प्राण बचाले अभी नहीं बिगड़ा तेरा मान दशानन कहना मेरा

पिथौरागढ़ सदर रामलीला में इन संवादो को सुनने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है। गोरखों के किले से घिरा हुआ रामलीला मैदान चारों ओर से दर्शको से खचाखच भरा रहता है। पिथौरागढ़ रामलीला की एक प्रमुख विशेषता यहाँ बनने वाले पुतले भी हैं। रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद का पुतला नगर के पुरानी बाजार में हिन्दु–मुस्लिम भाईचारे का प्रतीक है। पुरानी बाजार की खड़ी गली में इन पुतलों को बनाने का कार्य किया जाता है व रामलीला के अंतिम दिवस रावण वध के बाद इन पुतलों का दहन दशमी के दिन किया जाता है।

वर्तमान में कुछ तीन वर्षों से सदर रामलीला में महिला रामलीला का भी मंचन होने लगा है। इस रामलीला में सभी पात्रों का अभिनय नगर की महिलाओं के द्वारा ही किया जाता है। महिला रामलीला के साथ ही इसकी समाप्ति पर पहाड़ी बोली में रामलीला का आयोजन होने लगा है। पूरे क्षेत्र मे रामलीला की प्रसिद्धि बढती जा रही है। वे लोग जो पूर्व मे अपनी परंपराओं और मान्यताओं से दूर होने लग गये थे, वे भी वर्तमान में अपनी संस्कृति और सभ्यता से इन्हीं रामलीलाओं के माध्यम से जुड़ रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. त्रिवेदी, लाल सुदर्शन, रामलीला दर्पण नाटक, ज्योतिश प्रकाशन वाराणसी 1999।
2. मटियानी, महेन्द्र सिंह, पहाड़ पत्रिका, चम्पावत पिथौरागढ अंक।
3. दुबे, श्यामसुंदर,(सम्पादक), 2011,लोक राम–कथा, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
4. उत्तराखण्ड में रामलीला मंचों की परम्परा , मेरा पहाड़ मेरा उत्तराखण्ड डॉट इन।
5. पाण्डे, शिवचरण, (सम्पादक), अल्मोड़ा, पुरवासी, श्री लक्ष्मी भंडार (हुक्का क्लब), के विविध अंक।
6. उप्रेती, राजेश मोहन, धरोहर।
7. कुमाऊँ की रामलीला का संक्षिप्त परिचय (ऐनीफ्लिप डॉट कॉम)।
8. साक्षात्कार भूपेन्द्र सिंह माहर अध्यक्ष सदर रामलीला कमेटी पिथौरागढ़।
9. साक्षात्कार जीवन राम पूर्व हारमोनियम वादक सदर रामलीला कमेटी पिथौरागढ़।